

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

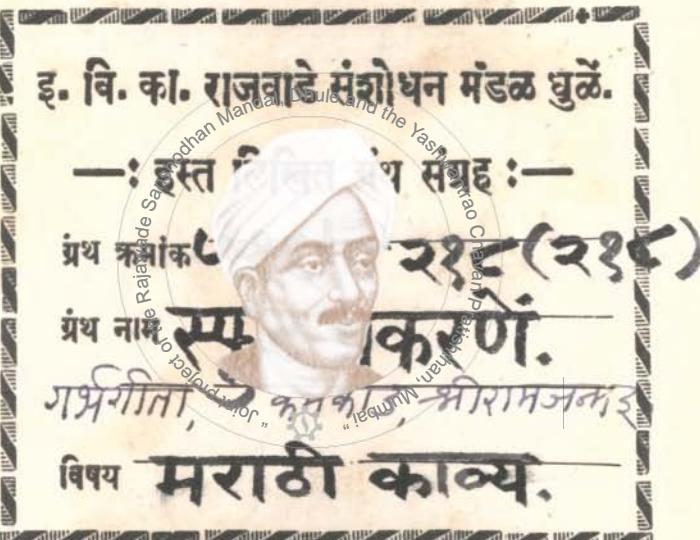
—ः इति १०४ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ८

ग्रंथ नाम स्तु करणे.

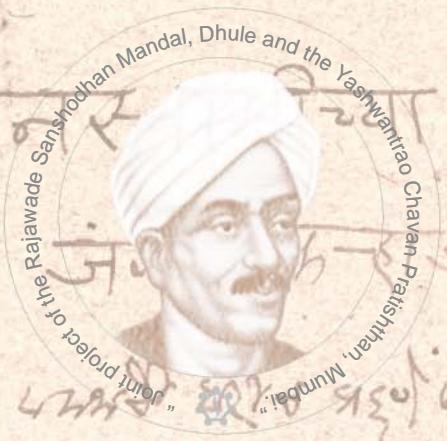
ग्रन्थगीता, काव्य, श्रीरामजन्म

विषय मराठी काव्य.



मराठी

वाम देव्या ग्रंथांने बाई



प्राची - लकड़ियाँ जूतों की खाड़ी
पाते कर्तव्य मुक्ति की

०॥१५॥

三

प्रगतीं धर्मशिरकायै कपुरगोराथ से सरकायधे
जाजन्मेत्तिकायै चन्द्राधरापु॥ नमस्त्रिवायै वनमः विवापा॥१
थेरो स्तुरिकाकुमनविनायै स्तिवारजपुनविविनिगाया॥
॥ सकुहलायनमः॥ असंदासमालंकालिहाल कायै
॥ कपोलमालं वा विनारवायै दिव्योवरगायै वदी इव
॥ गराय॥ अचलत्वमनव्यं कण्ठु पुरायै स्फुरत्फणाध्य
॥ ण तु वुगायै॥ हेमागदायै अजगागदायै नमः॥ ॥ २ ॥ विल
॥ लितिलोत्पल लो चत्वायै कान्तायै करु लो चत्वायै॥
॥ व्रोमे भूषणायै विनाम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ अराभासनक्षयमल
॥ कन्तनायै लिति
॥ नन्देत्रारायै
॥ यै त्रेलोक्यपत्त
॥ छरुस्तम्भायै॥ ६
॥ दूसिवाकामीयै
॥ त्रीपन्तमः॥ ७ ॥
॥ सप्तमोगीसहदीवजात॥ ८ ॥ आमोतिसोभास्यम
॥ नन्तकालं॥ यः पुजीनन्तस्य समस्त श्रिधै॥ ९
॥ इति श्री मद्भक्तवत्सायै पिरवीन आधनारीने
स्थवर्त्तो नमं पुणमस्तु ॥ १० ॥ ११ ॥

(1)

गणनीआशा श्रीभुजीकदप॥ पन
श्रीरामगर्भगिता॥ ९

॥ आजनेनउवाच ॥ गर्भवासंजासूय किप पेषते वनरः किम
जीर्थस्तेत्तंजमकथं देवं जनादनो ॥ १॥ श्रीरामगर्भगिता
॥ मानवामुढ आधत्य संसारस्य निलीपते लिप्यते ॥ आ
॥ रामकेन यजं निजिवनं धनसंपदा ॥ २॥ अजुनउवा
॥ च ॥ अरावाकेन गीत्प्राणि ॥ संसारविश्वावेधनात्मक
॥ नकर्मविपाकता ॥ लोको मुख तवं धनादा ॥ ३॥ श्रीरामगर्भ
॥ नुवाच ॥ आरामभेदं न तेष्यं निराशाशाश्रद्यते य
॥ ४॥ निव्यमकर्मकर्मव्यं प्राप्नाकसनालिप्यते ॥ ५॥
॥ कोमकोधं त्वं सरम् ॥ सत्त्वसरयते सानस
॥ वनेतेकम् चिंक
॥ लोकादेशनं क
॥ मध्यमुख्ये उनजनक
॥ मनसामान्त्रिष्वतेन
॥ वाच ॥ जिनेस्वते ह
॥ कल्पविकल्पनालिता ॥ ६॥ नाना
॥ रात्मपदलोकानान् द्वनेपुजनं ॥ मन्त्रलिपिना
॥ पाथस्वेकर्मनिराधक ॥ ७॥ आरामकीपते कोठी
॥ दानं यगिरिकं दन ॥ आत्मनवनजानाति मुक्तीना
॥ स्तिनेसंशया ॥ ८॥ कोषियसदृगते नेनकोषिदानं
॥ गजंहम ॥ गोदानं च सतश्चापि मुक्तिनास्तीति
॥ गीतिना ॥ ९॥ नमोक्षं पृथनेत्रा रक्षेन माम्भ्रा
॥ नारसुभी ॥ नमोक्षं कर्मधर्मैषं मीहीयनिष्ठं

॥१२॥ न मोक्षारणाध्यानं न मोक्षनमुनिपुजनः
 ना मोक्षकृद्दलारेण सोक्षसिद्धियनिगतः ॥१३॥ न मा-
 स कोटीयसेननमोक्षदानकायनं ॥ न मोक्षवनवासे
 न मोक्षमी ॥१४॥ न मोक्षस्त्रिमत्तुनेथे ॥ न मोक्षभस्त्र
 लेपनं ॥ न मोक्षस्त्रिमावासास्त्रिमोक्षमी ॥१५॥ न मो-
 क्ष्यनमोक्षनेनमोक्षदेहदृउनं ॥ न मोक्षगायने
 गिनं मोक्षमी ॥१६॥ यमाबृधीविकारेणा आत्म
 तृत्यनविद्यने ॥ यावद्गवान् पाठ्यनावस्थिनं
 स्थिरं नहि ॥१७॥ अ-
 यस्त्रिनिनां ॥ ज्ञान-
 किं क्रीयनाना-
 कथं प्रूप्यं कथं मल-
 कथं त्रिनिमलम् भव-
 श्वर्त्यात्मवतपात्रे ॥
 मैत्रीनपकाटी
 ॥ अभ्यानं २
 मनमवद्दाढ़ी
 श्रीवगवानुवागे ॥
 निमलनाडानं ॥२०॥ म
 न च गुरुवाक्यपुनमनवद्यने ॥२१॥ अनुनुवागे
 कनाकमदयोवीजलोकोहिदृढवधनं ॥ केनकर्म
 प्रकारेण आविजंवतनेननां ॥२२॥ श्रीवगवानुवागे
 योगिनौ कभा कमसीवलानमस्यअभ्यासेन ॥
 व्रह्माग्निभूजनेवीजंवीजंयोगीनाभूवने ॥२३॥
 योगिनौ सहजानं ॥ जन्मस्तु सुनवाद्यने
 विद्यनीषेधरहितं आवीजयोगिनाभवनेन ॥२४॥

४
सूर्यसारमयंगिरा प्रस्तुषमोक्षदायकं आगि
दृधयथावीजं शारवोपल्लवनविद्यने॥ रामान्तानो
दृधत्तद्यायोगिपुनर्जेन्तनविद्यने॥ ग्रह्याग्रह्या
त्तनोध्यायगभगीतापदमहत्॥ इति श्रीगामी
गिनासनात्पागार्थ॥ पृथ



श्रीवास्तकमकाँड

देवलद्वादिष्टभागहोनि देउवीनधनिकिउघेउनि॥
 नेजन्मनिदूर्लोउनि॥१॥ दृग्मीसुवेवोरीमान॥ कन
 विपाकद्वैलै नैसिसंगतवन्नलो॥ जेजेदाशज्यासि
 घउले॥ नेतगलेआधोगनि॥२॥ स्त्रीसंगकरिनिदेव
 लागणि॥ बापिकम्भोलनिमाउणि॥ समितोय
 थिघउपि नपरसकहोउनिजमनी॥३॥ आपणअसे
 विदेउणो॥ निदाकरिशब्दनाना। तोवच्छेखावरपु
 णाकाउणाहाउनिजर - गाविद्वाबदुसालह्य
 ठवित। आणिदुर
 रपिजम्भासेनी
 नेप्रति-पत्तिनीडु
 स्लवगंउसाध्याहोति
 रिघनांगाप निघपरा
 स्तिचे मुकेहोनिजर
 दृष्टवैलारीना॥ नावाचुरानामुणा व्याघ्रहोउनिजनी
 पर्सि॥४॥ स्त्रीयासाचारनेपकरिनी॥ परुषकुम्भकुम्भ
 धिलणीनिआदेशनी॥ नेपुनरपिजन्मास्तियति॥ होउ
 निजिनिकदिसिनी॥५॥ स्त्रीयासारपिजावृष्ट्यनीपजनी॥
 पुरुषकुम्भदारीदी। समाउनिजप्रेनप्रोगिनी॥ नापुन
 रपिजन्मासियेतीनाताहोनीबाल्लो॥६॥ स्त्रीयाबा
 ल्लाताहोनी॥ आचारवेत्तव्यकृद्धनकरीनी॥ सापुनरपिजन्मा
 सियनीवेशाहोतिविसीरागिणि॥७॥ साग्रहमदेमानतिअ
 पपरनाल्लवनि नेपुनरपिजन्मासियेतीक्रमीहोनीहरकृ
 णी॥८॥

११

सेवकस्त्रामीसिसेवाकरीती॥ आपिस्यामीसेवेभिति
 रेनाकरिति॥ नेपुनवपीजन्मासियेतीश्चानहोतिद्वग्निये
 ॥१३॥ स्त्रामीसेवकासि सेवाधेती॥ अपि स्यासव्यन्वजेका-
 वेदीती नेपुनरपिजन्मासियेतीकमागेतीधगाधती॥ १४
 धगाश्रमीआसनाप्यापिपुर्वासनवदीवयपुकरीती
 प्यापुनरपिजन्मासमेतीसुसनीहोउनिया॥ १५॥ उत्तम
 कुलिजन्मनि आपिजयानमारजेकाकमेतीयाचेपुर्वज
 द्वउती नवनिपनंगहोउनिः ॥ १६॥ त्रामीसकव्यनेनात्ति
 अपिजन्मनेनानपरीज्ञतेतीस्यामनिराजाननिधिके
 द्वाठनिनेस्यधीनीतु॥ ॥ १७॥ सकेत्तननदीपलाधेती
 तेष्टगुरवज्ञमील
 निपनीकहानिया

र

साधकसंगत
 उत्तरागगुनको
 कसंगते॥ याताचेभद्रनसो आला
 फक गावतद्वावगुनिगुनपावत
 साधसाध अराधक ॥ १॥

श्रीरामजन्मः॥

श्रीमहागणाधिपतेनमः॥ हृदइंआठउनीपरसार
 सा॥ वदनसेंव्यवनारकथारसा॥ सुरसजोमुनिचालि
 किगानसो॥ सकब्रामकथानुलिगानसे॥ १॥ ब्रगटा
 मचरित्रलोकरि॥ जिनचिसुकिन्याउराजिलोकरि॥ ले
 षुनिगानाधुनापकरामहा देनेनुरूपविलासकराम
 हा॥ २॥ शुक्रपध्मधारसवसंनिः॥ रामजन्मनवर्मी
 निधीसंतीं॥ वगिलीन्नन्नन्नयद्वलोकीं॥ यारुण
 निपुणतोआवले
 द्वावानांतोयो॥
 तजोउत्तमजन्म
 काल॥ ३॥ जनीम
 जरयाचंद्रकलं
 शिमानी॥ तोशुक्रपूर्णोजन्ममानी॥ ५॥ गाता
 मरसकेवक्षसंति॥ सविलाप्रथममासवसंती॥
 सारसंमधुरतोमधुजालाकीजयोनेअजिज
 न्मअजालो॥ ध्याक्रूरेत्राधणीसुयेकाकाभिमा
 नी॥ वसंनामिजोउत्तमत्वेविमानी॥ वडीलस्थ
 वंशीत्रभूजन्मकाविः॥ नयाहारवत्राउत्सा
 च्यासुकावी॥ ७॥ इसावनाराधिजगीशुकेल्पा॥

॥ भक्तिजनिं याश्रवणादिकेल्या ॥ नवत्रज्ञारं भजनी
 अजाला ॥ जन्मप्रसुतानवमीसनाला ॥ ८ ॥ नवदीन
 नवरात्रीभक्तिलोकीकराहो ॥ नवविधनिजभक्ति
 स्त्रविकीकराहो ॥ नवरसन्नवमीसन्नामीसा
 जन्मजाला ॥ नवनवरसउपर्दीप्राप्तिनिवेद्याआजाला ॥
 ॥ ९ ॥ नवविधानवरात्रीमहाधने ॥ गुणकथाप्रवणा
 दिक्षाधने ॥ कल्पनिषयहित्यस्तनिवेदना ॥ मन
 निसंन्नमहोन्नुन्न- चिनज्ञेऽउपलभीप
 विवासी ॥ रथ्यवी
 लुनितुज्यविष
 ने ॥ ११ ॥ उपराधम्
 जेनेणनिष्यसार ॥ नवास्ती ॥ भक्तिनां
 नजाकिर्तनाम् ॥ सुख्यायेविषय
 नदुपारांजन्मलारामगपारा ॥ लपउनिसक्त
 गात्रिडाउकेतुपुराणा ॥ द्वारयग्रहसाधांसु
 र्यज्ञालाजानानो ॥ कुलटीलकपातायानेत्रि
 साध्यनठोतो ॥ १३ ॥ सासुखारवीउरव्युपारा ॥
 वाटनेस्त्ररनसेनदुपारां ॥ स्त्रव्युधयास्त्रव्युसेनि
 घडीहो ॥ कीस्त्रगोनिसुख्यत्तेउघृडिहो ॥ १४ ॥ भृ
 ग्यञ्तरिद्वितुनिलेकुराने ॥ अतोभास्त्रेलायि

दुरोनिवावीजट्टप्रकाधवाते
यलेकरानें॥ स्तृणिउद्दत्तेलागेस्तृणराधवाते॥ १५॥
स्तृयेयास्तवअसंगगनीष॥ हेविचाजनिनयेषग
नीष॥ साउलिकजनिबाड्विपाह॥ उद्दत्तरां किन
करीत्वत्तपाह॥ धाघास्तणेवाईलहेमला
जे॥ घेउनियोहेकाहेमलाजे॥ जानांस्त्रिमींव
व्यवधानमानेहेरुनिसोउलरधुत्तमाने�॥ १६॥
आणिविप्रगहकात्तकर्जनि॥ वालिम्कीप्रभृ
नियथकरीत्तेया
हुंत्तद्विलंबरहि
जोआउत्तमसनिः
पदानें॥ सेविनिग्र
प्रभुज्याविमलद
क्षणिः॥ स्तृणनिभाजात्तयाकुपादाहा॥ करिल
शुभ्रयरोस्त्वदित्तादाहा॥ ३०॥ दशरथस्त्वसुता
ननपाहानो॥ निजसुवेंसुखिहोउचिगाहानो॥
जेगपदिंसुवतंतुविगंजेनो॥ प्रंगहलानयनी
रधुनाजतो॥ ३१॥ दवीच्याकरंज्ञासनायेघना
स्त्रि॥ नंसास्तृयवंशिंघनशामराम॥ करिकाळ
व्यवस्थत्तास्त्राविशम॥ ३२॥ जसेवानकांलाधनाने
तयाराचीकर्त्तापत्तेमेघनास्त्रि॥

जपाणि॥ स्वभक्तों न सागम के दंड पाणि॥५
 जो निधनः ज्ञाम हाम भजा ला॥ जेया कारण
 जन्म घेणे अज्ञा ला॥ ३३॥ बुंग बुंगर बनुंग मू
 दंगी॥ संग संग न टनी स्वल्ल दंगी॥ अंग मंग
 बनुदा विन रंगीं राम रंग सुख सिंधु न रंगी॥
 ३४॥ दुम दुम धनि वाज नि दुम भी॥ सहि
 न रावण राक्षस दुष्टी॥ सरवन रास कल अ
 म रामहा॥ ३५॥ धुतम नामहा॥ ३५॥
 रवि कुल न रध
 दे असरं महा
 करि तय न उटहे
 पुर्ण गुण धन वले
 कलो की॥ भाष्यले चाहा॥ सरवरा हो॥ जो मनि
 लिपनि मान वरा हो॥ ३६॥ तो कृष्णिता राघव
 दान वारी॥ श्रीभूमि संकल्प कर्त्तविधाली॥
 विचाहता त्काल करनि धाली॥ ३७॥ आणि कआ
 नं दआपा रजा ला॥ कीं लाध ले दाई यार जा
 ला॥ ठे श्यासुर राघव जम कली॥ जना मि
 धाली धरणि मुकाणि॥ ३८॥ असे सर्वभूतो

सहि वेगलाले॥ दिल्हे सोहवे दोषस्या चे गळाले॥
 जक्केनाणि नां राम को दंडपाणि॥ मठो दोजागेले
 स्त्रपो अजीपाणि॥ ३०॥ तरनिल्पाधारण अ सेज
 छाला॥ कछेस्त्रपो होषगत्तेजलाजगला॥ तेब्हुं
 नहीं तार कवाल्लिराम॥ देईलअरस्त्रासि सनो
 भीराम॥ ३१॥ देखो नियाजनम् अस अजाला॥
 अनंदमोठाउदका मिजाला॥ ऐसा चिआनंद
 समन्नभुतिं आज्ञा गशाकर्शो होविभूती॥ ३२
 भयरास्त्राच
 नादिसुकुडा
 लापाल्पार
 ॥ ३३॥ स्त्ररुतेराघव
 लोकिनलोकी
 प्रगटना कपिमलातिवा॥ ३४॥ इना पुत्रराम पू
 रमानव सांचा॥ पुत्रकास चुक्षिनरकाचा॥ ३५॥ रुग्न
 ती अनुकृषीनरकाचा॥ ३५॥ रामभक्त सुनमाने
 विलोक्ति॥ नात्पिनाननरकाचावलोकी॥ शोषित
 अलिक्तेजवदावी॥ यासि नोखपदराघवदावी
 ॥ ३६॥ वंशाज्यानकरीराघवसेवा॥ कीं कथाकरी

निष्ठां न आसावा॥ सर्ववंशी करीधन्यमहोत्
क हीन असाज महोतो॥३७॥ वंशधन्य करीरा
मधरनी॥ अपि तां हृष पराम चरित्री॥ पातीलीनग
री वोस प्रसात्ती॥ राम की निभिया नियम सूती॥३८
वायुस आनंद अपाजाल॥ किं प्राप्तिया पापिया
रजाल॥ लाधल सविल रघात माते॥ स्वभुत्र
तोधन्य करील माते॥३९॥ श्रीरामजन्मसमई

जेन रामनाम॥ द्वारा गङ्गनिउठेमनोभी
राम॥ उत्तरका
ला॥ कीर्त्ति क
येक ब्रह्मगुप्त
देजन वाप्ति॥ देव
मराद्भसहुत्तमा॥.....॥४०॥ सुमित्रासु
ताच्चाअहो अग्रजाल॥ जगि जन्मजाल
परशा आजाल॥ असा सर्वभूतां मिअ
नं इजाल॥ अपक्षी अहित्या पदां श्याजा
ला॥४१॥ अधिसमस्तहि राघव किर्तनी॥
जगि त्रिगानि निरोपिनी तर्तनी॥ बदु सुमित्र
पिवा लिख कवे रवरी॥ करनि दारव वीली नि
जवं रवरी॥४२॥

चिश्चामित्रस्यामिच्याजनकाकी॥ नानोला
गउत्साहोच्यासुकाकी॥ कींसींआतां आपि
नस्यअश्रमात॥ नाविमाइसारामहोयाश्र
माते॥ ४७॥ भविष्यातपाहकलनिहृदईधा
नमुनितो॥ सुरवेनारेल्लागत्वरितरघुनाथा
नमुनितो॥ खवंरीगामातेगुणरविनेत्ते
समजला॥ हतोहतोयायत्रिभुवनीवाणी
द्वास्त्रिमजला॥

मङ्गागवंकात अ
॥ श्रीमद्भामकथा
येभासती॥ गातो
० मध्येवसिष्टान्वर्धी॥
नन्दीलक्ष्मनिसर्व
व्ययी॥ ४८॥ पाठ्यायरामासमानमुनिहो॥ स्य
वंरीस्मेरभक्तजोनेमुनिहो॥ सुरवेनामसे
वीभत्तागोन्नजाला॥ स्मरनिरष्टिमात्रसंतु
द्वजाला॥ ४९॥ इयादिनास्त्रिनिंरसते
आपारहोग्रंथवासननिरूपितराघवाजा॥ व
भाहरिलेमगतेसकलाधवाजा॥ ५०॥ श्रीबामन
द्वेनेरामजमनमात्याम् ५१ ५२ ५३ ५४

ग्रन्थीअहिल्योद्धरण॥ १८

श्रीगणेशायनमः॥ करनिनमनसीचलंभाच्यापह
ते॥ कथिनपद्दरज्ञात्या॥ कीर्तिच्यासंपदातें॥ जउसि
वतनुजाकिलीजेअहिल्यामतीर्थी॥ निजरापारमेंके
तेउद्देश्यरामतीर्थी॥ १९ सुरद्वंभहिल्यासनिसीरमाया॥
तीलादाविलीजेनमाकारमाया॥ प्रियाअत्मयात्मान
साभावदावी॥ अहंकारबुद्धिसतेपैवदावी॥ २० अ
हंकारइद्धियात्मत्वदावी॥ रमबुद्धिसिंतेष्य
हिल्यावदावी॥ शिवाहनजन्मगमज्यामतीते॥

२१। ग्रन्थकिलित्कु
सताससिचमानु
शिलादपायपण
ाकारमाया॥ नजा
घेउधानिमिटेंत्री
रदाविच्यापतीतामाया॥

रणनिमेलज्या
निमिपपातेन॥
तेन॥ २२। अहिल्यान
जेनिगेलीयरात्रि
लात्रापतितेन॥ २३।
गोतमेकजनिकापनिहना॥ इगोलीनिजसती
पतिब्रेना॥ पावउनिअधमाधमागती॥ मानि
लीनिरपराधमागती॥ धारापूनिहोपअनु
तत्यमुनीसतीते॥ कीं ऊकेनसुरद्वंत्रिमनी
सतीते॥ म्याशापिलीनिरजात्मकनामतीर्थी॥

नाशीरघुत्तमनशीहनरामतीर्थी॥ २५॥ सामरि

दग्धाघवतानी॥ येश्चिक्रेत्वा विशुनो अवतानी॥
उद्धरिजिसजउभूमनिने॥ नामउद्धरिजसाकुपनि
ने॥ ८॥ कानिजसवननउरुक्तांपनिचे॥ जाले
अवेवनसिक्षामयनपनिचे॥ नाशास्त्रनश्वण
केशहिवेगवाते॥ देरुनिबाष्ट्रमनिष्यानुय
निगच्छाले॥ ९॥ अवयवआवधेहितेयथापुर्वसा
रे॥ कुरल्पसरलोकेइर्थत्यांतेपसारे॥ कपि
तिलवनत्रयस्वाम् पट्ट॥ सपउनिसुनि
मनीहासोकव
लाननुक्त्याम् ५
रोकहेउनिअ
पारसनिचा॥ ६
जाती॥ गजवाष्ट्रनिजीवहोउनिजाती॥ दे
लापायलगेमृगांकाननारा॥ यडोजंगमा
सामनोकाननरा॥ ७॥ वसनहेनिघनांरुषि
अननीवसनिजंगमजीवकाननी॥ चिपिन
वासनयेरित्तिनेमुनी॥ निजननुबद्धीपती
नेमुनी॥ ८॥ काटीसहस्रचर्षेआजला॥

वंशीरवि-चामगजनमजाल॥ नोरामस्मिनवि-
 प्रोप्रसंगे॥ यद्यावनाकौशिकविप्रसंगे॥ १६॥
 तोक्त्तावनविप्रनदेस्थित्युजंगमाते॥ सर्व
 सनामहिवदेअर्गीसांगमाते॥ हासेस्त्वपेष्ठि-
 मुनीसुराविधिपुर्वकांही॥ तुंनिर्भित्ताविनादिनसे
 तुजसर्वकांही॥ १५॥ सर्वजनामअजिलौकी
 कभावहावी॥ प्याकांनयात्रनिनपूर्वकथा
 वहावी॥ सांगोह
 वानीदीक्षाकर
 कधाकुरिकान्चन्
 न॥ सक्कवाहानि-
 धीप्रवधुश्रावा॥
 रीमंडमिरवे॥ मुखिरांडप्रात्मा अवयवयथाएु
 रवरवे॥ ऋषिविश्वमित्राप्रतिसक्तदेउनिषु
 सनिष्टुखकाणाहंसेस्त्वप्रतिवर्जीगौनमस-
 ती॥ १६॥ दिल्लेवयाउत्तरका॒शिकाने॥ कीरापहा
 रेकलांध्यकाने॥ जालीनमित्रप्रतिहीनवाणी॥
 अकांहल्लिसुस्त्वरदीनवाणी॥ १७॥ कर्त्तृनीग

गलामोकलास्तारसाक्षी॥ रुदेकिजगमर्वतं सा
रसाक्षी॥ पनिप्रतिकामीनसेपापकामी॥ अस्तिते
र्णा अहापावलेंपौष कांमी॥ २०॥ पनिट्टनामीपनिह
रकठी॥ धालुनिधमेनिजकाळकंठी॥ बेच्चे
ईहे नयामुजगमाने॥ द्येनाउत्तदुष्मुजंगमाने॥ २१॥
ज्याक्षासकबमृतभवष्यागावें॥ ऐश्वर्यापनिसहि
अस्तमकांउड़ावें॥ गरुच्छकांतस्तपउनि
उजेरनिवै॥ २२॥ इ
रामानीमनि
निमनीत्तरप
पातंवबहुकृति
अतिदीघनमात्तमाने॥ २३॥ लपेस्यशेला
कामदेवाधमानें॥ अहिव्येतसाजोवला
कोधमाने॥ भालिनुसिमीईद्रदाधेममान॥
त्रीलोकिनद्यनिलआस्तासमान॥ २४॥ वि
निमज्जैलाउमज्जला अनुनामसाजा॥ २५॥

वरिशापअनिहानणतापसात्॥ हेनासिलेसुह
 तम्यांतवधापतयाने॥ अन्तांक्षेकतनिविन
 वोतपात्रग्रृप॥ हाशापआपिषुर्वांतरनुजला
 गे॥ स्पैर्डेइकल्पितर्द्वयनुजलागे॥ हो
 हिसयापरीहरनिसमागमाने॥ भास्यपुन्हा
 मीष्टसिनुंचरमागमाने॥ २८। हेकोनिजब
 लाक्ष्मिवर्यवापिष्ठानांकोकानेलपेक्षा
 नेसवाणि॥ हेष्टक्षे रितिहासी॥ मिन
 यवेनसनेकाए
 ठेअस्तिवर्ष
 गती॥ बहुतदीघ
 क्रवदेनीसनेसु
 णीवतारी॥ शिवासानासमज्ञोहेवतारी॥
 घनशासहासलाउपहाने॥ नुतेआपिदेशि
 निल्मासंपहाने॥ २९। पउशाढकानीजसाहो
 सनिका॥ सुखेयेनरोमांचदेहासनिका॥ ज
 गिपुर्जीवनिजानंजालासनीआगविरा
 मतंडाअजाला॥ ३०। जार्लीसिलापरिमनि
 सुरवनेसनिच॥ आद्यपिहिदिसनसेसुर्वि



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com